21वीं सदी में विकास और पर्यावरण संरक्षण :भारत के विशेष सन्दर्भ में

डा० शिवकुमार सिंह
एसो0प्रोफेसर,भूगोल
राजेंद्र प्रसाद स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मीरगंज (बरेली)

आज विकास की जगमगाहट वास्तव में "पर्यावरण" का ही प्रतिफल हैं। अर्थात् आदि काल से वर्तमान तक मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यावरण द्वारा ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में होती रही है। साथ ही पर्यावरण ने मानव को विभिन्न प्रौद्योगिक एवं तकनीकी विकास हेतु समय-समय पर प्रेरित किया है, जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अपने आप को समृद्धिशाली मानता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि "पर्यावरण" एक ऐसा आवरण है जिसके अन्तर्गत विशेषकर वे सभी तत्व सम्मलित किये जाते हैं। जो कि समस्त जीवधारियों के विकास में निर्धारण भूमिका निभाते हैं, जैसे भाव वाचक तत्व - क्षेत्रीय विस्तार एवं आकार, प्रादेशिक स्वरूप एवं स्थिति। भौतिक तत्व जलवायु, मिट्टी, स्थलाकृतिक स्वरूप आदि ।

पर्यावरण भौतिक एवं सांस्कृतिक दो प्रकार का होता है। भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत सम्पूर्ण प्रकृति के साम्राज्य की वे सभी शक्तियाँ तथा तत्व सम्मलित किये जाते हैं, जिनका प्रभाव मानव के प्राथमिक क्रिया-कलापों जैसे- भोजन, वस्त्र आदि पर प्रत्यक्ष रूप में पड़ता है। सांस्कृतिक पर्यावरण पूर्णतः मानवीय अभिव्यजंना की परिणति है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि "मानवीय ज्ञान एवं प्रौद्योगिकीय विकास के आधार पर भौतिक घटकों का संसाधन के रूप में उपयोग कर मनुष्य द्वारा भौतिक परिवेश के परिवर्तन एवं परिमार्जित स्वरूप को "सांस्कृतिक पर्यावरण" कहा जाता है।

आज विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्र चाहे वह विकसित हों या विकासशील "पर्यावरणीय संकट" से भलीभांति अवगत हैं। परिणाम स्वरूप विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्र के समक्ष "पर्यावरण सन्तुलन" की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गयी है। अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि प्रकृति ने जो प्राकृतिक सम्पदायें हमे विरासत में उपहार स्वरूप सोंपी है, उनका उपयोग रचनात्मक दृष्टिकोण से करते हुए भविष्य के लिये भी सुरक्षित रखें। इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता ही नहीं अपितु अनिवार्यता है। एक ओर हम राष्ट्र के विकास की कल्पना करते हैं साथ ही दूसरी ओर प्रकृति के साथ अत्यधि क सीमा तक हस्तक्षेप करते हैं। यह प्राकृतिक हस्तक्षेप मानव अपने निहित स्वार्थ के लिये करता है जो प्रकृति और मानव के पारस्परिक सामंजस्य को प्रभावित करता है। साथ ही यह तथ्य कि प्रकृति इस हस्तक्षेप को बर्दास्त करने में कब तक सक्षम होती है, यह एक महत्वपूर्ण एवं विचारणीय प्रश्न है? इस संदर्भ में ब्रोक एवं वैब महोदय का यह कथन विचारणीय है कि "मानव के क्रिया-कलाप जितने अधिक होंगे प्रकृति का बदला उतना ही अधिक होगा।" अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सन्तुलित मात्रा में प्रकृति एवं मानव दोनों के भविष्य के हित में होगा। यदि जैसे सन्तुलन प्रभावित होता है तो प्रकृति मानव की विनाशकारी उपयोग की प्रवृत्ति पर स्वयं अंकुश लगाने के लिये बाध्य

होगी, जिसके अन्तर्गत उस्मानबाद एवं भुज भूकम्प तथा मालपा जैसे भू-स्खलन इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावृत्ति होगी, परिणाम स्वरूप मानव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही प्रकार से प्रभावित होगा।

यह सर्वमान्य सत्य है कि किसी भी राष्ट्र का विकास उसके औद्योगिक आधारों द्वारा ही सम्भव है। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि विभिन्न उद्योगों से कितना प्रदूषण हो रहा है उसका पर्यावरण सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इस महत्वपूर्ण तथ्य को दृष्टिगत करते हुए राष्ट्रों के विकास के लिये उचित नियोजन किया जाना आवश्यक है। गत वर्षों में मानव ने पर्यावरण सम्बन्धी सूक्ष्य परिवर्तन किये हैं जैसे- स्थलाकृतियों में परिवर्तन, वनस्पतियों में परिवर्तन, जीवों में परिवर्तन, जलवायु में सूक्ष्म परिवर्तन तथा पैतृक गुणों में परिवर्तन। इसके परिणाम स्वरूप विकास निश्चित हुआ है, परन्तु साथ ही साथ समान्तर रूप में पर्यावरण भी असंतुलित हो रहा है। अतः यह मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गयी गम्भीर समस्या है। इसका प्रमुख कारण मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के प्रति "लूटमार" की विचारधारा है जिससे आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष "पर्यावरण संरक्षण" की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गयी है। यहाँ हैबिट एवं हसरे के यह विचार उल्लेखनीय है। मानव और पर्यावरण के संतुलन के लिये समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि तकनीकी एवं वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अपने आप में बुरी चीज नहीं है बुराई है उस समाज में जो इनका उचित प्रयोग नहीं करता है।"

इसलिए शायद पिछले कुछ वर्षों में "पर्यावरण" औसत मध्यम वर्गीय पदे-लिखें वर्ग के लिये चिर परिचित शब्द बन चुका है। एक और शब्द पिछले कुछ वर्षों से अधिक शहरी शिक्षित व्यक्ति के जीवन में आ बसा है "प्रदूषण" । यद्यपि पर्यावरण की रचना में प्रकृति प्रदत्त वायु, मिट्टी, जल वनस्पति एवं जीव-जन्तुओं का प्रमुख योगदान रहता है। जब तक ये सभी अवयव प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखते हैं, तब तक पारिस्थितिक सन्तुलन स्थापित रहता है तथापि जैसे ही मनुष्य द्वारा अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं की भूख मिटाने के लिये औद्योगीकरण, नगरीयकरण इत्यादि विकास कार्य में तल्लीन हो जाता है तत्काल पारिस्थितिक सन्तुलन बिगड़ जाता है और उस समय "पर्यावरण प्रदूषण" जैसे दानवीय समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। रॉयल कमीशन आन एनवायरमेंटल पॉल्यूशन ने कहा है कि "मानव के सभी क्रिया-कलाप, जो पर्यावरण के तत्वों को कु-प्रभावित करते रहते है. प्रदूषण के लिये उत्तरदायी कारण बनते हैं।

प्रदूषण के प्रकार, तत्व एवं साधन–

प्रदूषण के प्रकार	प्रदूषण उत्पन्न करने वाले तत्व	साधन
1. जल प्रदूषण	1.Odour 2. Suspended Solid 3. PH 4. Turbidity 5. Dissolved Solid 6. B.O.D. 7. C.O.D. 8.Ammonia & Urea 9. Nitrates Nitrites 10. Alkalinity and Chloride 11. Sulphite and Sulphates 12. Lead Chromium, Zinc, Mercury 13. Organic Pesticides, Insecticides 14. Oil & grease 15. Tannin	वाहित मल, औद्योगिक अवशिष्ट, रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक दवायें ।
2.वायु प्रदूषण	1. Oxides of sulphur with air 2. Smokes 3.Air borne particles 4. Oxidants including Ozone 5. Carbon Monoxide 6. Lead 7. Asbestos 8. Beryllium	धूल-कण, कोयला, राख, सीमेण्ट, धूल अवशिष्ट आदि ।
3. भू-प्रदूषण	1. वाहित मल 2. औद्योगिक अवशिष्ट 3. मानव तथा पशु के मलमूत्र 4. रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक दवायें	मल, मूत्र गोबर डी० डी० टी० आदि।
4. ध्वनि प्रदूषण	विभिन्न प्रकार की गाड़ियों, वायुयानों तथा कारखानों से उत्पन्न होने वाली कर्ण वेधी ध्वनियाँ	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि विभिन्न प्रदूषणों को मनुष्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहित कर रहा है। यह सर्वमान्य सत्य है कि मानव की बढ़ती हुई आवश्यकताओ के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अविवेक एवं अदूरदर्शिता पूर्ण दोहन, नगरीयकरण औद्योगिकरण के कारण जल-प्रदूषण, वायु प्रदूषण, सामाजिक-प्रदूषण एवं औद्योगिक सभ्यता की समस्यायें वर्तमान में मानव समाज के लिये दानवीय स्वरूप धारण करती जा रही हैं।

पी० हैगट महोदय ने कहा है कि "जल मिट्टी, वायु के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में होने वाले ऐसे परिवर्तनों को जो मानव-जीवन, रहन-सहन के स्तर तथा अन्य जीवों को प्रभावित करते हैं, प्रदूषण की संज्ञा दी जाती है।

"जल ही जीवन है" को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष 5 जून "पर्यावरण दिवस " पर जल संरक्षण पर अत्यधिक जोर दिया गया, क्योंकि जल जीवों की अनिवार्य आवश्यकता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही साथ जल की माँग में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। हमारे देश में जल आपूर्ति के प्रमुख साधनों में नदी, झील, तालाब, कुएँ व नलकूप इत्यादि है, वर्तमान में उपरोक्त साधनों में "प्रदूषण" का प्रकोप बढ़ता जा रह है। परिणाम स्वरूप हमारी पवित्र नदियाँ जैसे- गंगा, यमुना, गोदावरी, दामोदर, हुगली आदि प्रदूषण की भयंकर चपेट में हैं। हमारे देश में लगभग 1750 उद्योग ऐसे है जिनसे "जल प्रदूषण" की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गयी हैं। एक ओर नगरों में प्रदूषित जल द्वारा विभिन्न प्रकार की बीमारियों को बढ़ावा मिल रहा है दूसरी ओर जल की अपर्याप्तता भी समस्यात्मक स्वरूप लिये हुए हैं। वर्तमान में भूमिगत जल के निरन्तर गिरते स्तर को दृष्टिगत रखते हुए उचित जल संयोजन की अत्यन्त आवश्यकता है।

हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि भारत में औद्योगिकरण बिना विकास सम्भव नहीं है, किन्तु यह स्पष्ट समझ लेना आवश्यक है कि औद्योगिकरण का वर्तमान स्वरूप क्या है? जो पर्यावरण संतुलन में अवरोध उत्पन्न तो नहीं कर रहा है। औद्योगिक विकास का अब तक का हमारा मॉडल न सिर्फ सामाजिक रूप से अन्यायपूर्ण बल्कि आर्थिक रूप से भी उचित नहीं रहा है। अतः विकास का वर्गीय स्वरूप समाप्त कर पर्यावरण सम्बन्धी चल रहे विभिन्न चल रहे विभिन्न आन्दोलनों जैसे उत्तराखण्ड में चिपको आन्दोलन, नर्मदाघाटी का नर्मदा बचाओ आन्दोलन, बलिया पाल में नेशनल टेस्टिंग रेंज के विरूद्ध एक सशक्त जन आन्दोलन, टिहरी बाँध से सम्बन्धित आन्दोलन एक जीते जागते उदाहरण है।Bअतः आज यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि प्राकृतिक सामजस्य स्थापित कर विकास हेतु पर्यावरण के समान्तर नियोजन तैयार कर क्रियान्वयन किया जाय

REFERENCES

1. YI-fu-tuan :Man and Nature, 1971
2. White and Renner
3. Webb Broek and : Geography of Mankind, 1973.
4. Brown Harrison :Technological Denudation "in" W.L. Thomas, Man's Role in changing Face of the Earth, 1956.
5. Sharma, P.D. :Elementary of Ecology, 1977.
6. Krebs : Ecology, 1977
7. Hewit and Harre :Man and Enviranment, Conceptual Frame Work. 1973.
8. Freser, F. Darling : The Unity of Ecology, 1963.
9. Simmons, I.G. : The Ecology of Natural Resources, 1974.
10. Smith. D.M. :Human Geography, 1977.
11. सिंह सविन्द्र :पर्यावरण भूगोल, 1998
12. त्रिपाठी आर.डी. :जनाकिकीय एवं जनसंख्या अध्ययन, 1999